[श्री जी० भ० कृपलानी]

और धन भी दिया था जिसके बारे में अभी तक यही नहीं बताया गया कि यह किस प्रकार उपयोग किया गया। हमें जन साधारण पर विश्वास करना सीखना है जैसा गांधीजी ने किया था और तभी हम वज्र की भान्ति हर संकट का मुकाबला करने योग्य हो सकते हैं।

Shri Yashpal Singh : Sir, on this occassion, sometime should have been given to those Members like S. Surjit Singh Majithia, Ch. Lahiri Singh, Shri H. P. Chatterjee, whose sons and relations have laid down their lives in the battlefront.

Mr. Speaker : You are right but I am sorry we have no time left. The hon. Prime Minister.

प्रधान मंत्री तथा अणु शक्ति मंत्री (श्री लाल बहादूर शास्त्री) : मैं सभा के प्रत्येक सदस्य का आभारी हूं क्योंकि प्रत्येक दल से मैंने एक ही स्वर में यही कहते सुना है कि हम अपने देश की प्रभुसत्ता और प्रादेशिक अखण्डता की हर मूल्य पर रक्षा करेंगे। यह सारे भारत की आवाज़ है जो यहां प्रतिध्वनित हुई है। आज सारे देश में हार्दिक एकता है और इस संकट में यही एकता हमारा सबसे महान बल सिद्ध हुआ है।

यद्यपि युद्ध विराम हो गया है परन्तु पाकिस्तान की आनाकानी से भविष्य में कई उलझने पैदा हो सकती हैं विशेषकर जब पाकिस्तानी राष्ट्रपति और विदेश मंत्री अब भी धमकियां दे रहे हैं मैंने भारत का पक्ष संयुक्त राष्ट्र के महा-सचिव को भेजे गये अपने 14 सितम्बर के पत्र में बिल्कुल स्पष्ट कर दिया है। सुरक्षा परिषद के तीनों संकल्पों से जो अर्थ हम निकाल पाये हैं वह यही है कि ये पाकिस्तान की नियमित सेनाओं तथा घुसपैठियों दोनों पर बराबर लागू होते हैं। पाकिस्तान को इन घुसपैठियों को स्वीकार करना होगा और उन्हें वापिस बुलाना होगा। परन्तु स्वयं महा-सचिव की रिपोर्ट के बावजूद पाकिस्तान इस उत्तरदायित्व से इन्कार करता रहा है और यदि वह इस रवैया पर अड़ा रहा तो हमें स्वयं उन्हें निकाल बाहर करना होगा।

जम्मू तथा काश्मीर राज्य के संबंध में हमारी नीति बिल्कुल स्पष्ट और दृढ़ है कि यह भारत का अभिन्न अंग है। वहां की जनता को पहले ही आत्म निर्णय का अधिकार मिल चुका है और तीन आम चुनावों द्वारा वे अपना निर्णय दे चुके हैं।

भविष्य में भावी खतरे को देखने हुये हमें अपनी तैयारी में ढील नहीं बरतनी है और निश्चय ही उसका सामना करने के लिये तैयार हैं।

जैसा श्री अल्वारेस ने कहा कि लगता है रुस काश्मीर समस्या को दुबारा जीवित करने पर तैयार हो गया है, ठीक नहीं है। आज रुस शान्ति का सच्चा समर्थक है और क्योंकि वह युद्ध भयंकरता को समझता है इसलिये मित्रता के नाते भारत और पाकिस्तान के सम्बन्धों में सुधार चाहता है। उनके इरादे शुद्ध हैं और इसीलिये हमने उनकी पहल का स्वागत किया है।

क्योंकि श्री भागवत झाव आज़ाद के गैर-सरकारी संकल्प पर चर्चा अब अगले सत्र में होगी इस लिये इस बारे में मुझे अभी कुछ नहीं कहना।

विदेशों में हमारे राजनैतिक मिशनों द्वारा किये जा रहे कार्य के बारे में मैं सभा को सच्चे हृदय से यह बता सकता हूं कि इस अवसर पर हमारे सभी मिशन सतर्क तथा सचेत रहे हैं। उन्होंने उन सरकारों को, जिनके साथ वह सम्बन्धित हैं, होने वाली घटनाओं तथा हमारे ध्येय के औचित्य

से पूर्णतया अवगत करने के कार्य को बहुत अच्छे ढंग से किया है। कुछ सरकारें जो रवैया अपनाती है, वह, मेरे विचार में, इस बात पर निर्भर नहीं करता है अथवा उस पर इस बात का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है जो कुछ हमारे राजदूतों को कहना होता है। वहां पर उन्हें पूर्वनिश्चित दृष्टिकोणों तथा प्रतिकूल प्रभावों का विरोध करना पड़ता है। फिर भी हमें अपने मामले पर अत्याधिक अच्छे ढंग प्रकाश डालने तथा संसार के सभी भागों में भारत के मित्रों की संख्या बढ़ाने के लिये निरंतर प्रयत्न करते रहना चाहिये।

अध्यक्ष महोदय, अब मैं कुछ घरेलू मामलों के बारे में भी कहना चाहता हूं। जहां हमें राष्ट्र उत्पन्न हुए उत्साह को बनाये रखना है वहां हमें अपनी प्रतिरक्षा के लिये निरंतर तैयारी करते रहना है और अपनी सभी सीमाओं पर सतर्क रहना है। अपनी प्रतिरक्षा करने हेतु सुदृढ़ कार्यवाही करने के लिये समूचे राष्ट्र को काफी बलिदान करने पड़ेंगे। हो सकता है कि हम सभी लोगों को कुछ त्याग भी करने पड़ें और अपने आर्थिक विकास सम्बन्धी कार्यों में भी ढील देनी पड़े ताकि हमारी प्रतिरक्षा कमजोर न होने पाये।

हमारे सम्मुख जो आज महान कार्य पड़ा हुआ है, हमें उसे यथार्थता की भावना से निपटाना होगा तथा इस तथ्य के प्रति हमें पूर्णतः सचेत रहना होगा कि आत्म-विश्वास ही हमारा सर्वोपरि लक्ष्य होना चाहिये। इन ऐतिहासिक अवसरों पर सभा द्वारा दिये गये शानदार समर्थन के लिये मैं इस महा सभा का आभारी हूं।

अध्यक्ष महोदय, मैं सभा से अपील करता हूं कि वह हमारे प्रतिरक्षा मंत्री द्वारा सशस्त्र सेना ने जो सराहनीय कार्य किया है, उस के लिये उनके प्रति इस सभा की प्रशंसा तथा कृतज्ञता व्यक्त करने को हेतु आपको अधिकृत करें।

आपकी अनुमति से मैं यह सुझाव भी देना चाहता हूं कि सभासदों को उन सैनिकों, वायु सैनिकों, पुलिस के कर्मचारियों तथा नागरिकों की स्मृति में खड़े होकर एक मिनट मौन रहना चाहिये जिन्होंने अपनी मातृ-भूमि की रक्षा करते हुए वीर गति पाई है।

अध्यक्ष महोदय : सभासद अब एक मिनट के लिये मौन खड़े हों।

(इसके पश्चात् सदस्य एक मिनट के लिये मौन खड़े रहे।)

(The Members then stood in silence for a minute.)

विधेयकों पर राष्ट्रपति की अनुमति

PRESIDENT'S ASSENT TO BILL

सचिव : श्रीमान्, मैं चालू सत्र में संसद् की दोनों सभाओं द्वारा पारित किये गये निम्नलिखित चार विधेयक, जिन पर 17 सितम्बर, 1965 को सभा में पिछली बार प्रतिवेदन देने के पश्चात् राष्ट्रपति की अनुमति प्राप्त हुई है, सभा पटल पर रखता हूं :—

(1) प्रेस तथा पुस्तक रजिस्ट्रीकरण (संशोधन) विधेयक, 1965

(2) लोक-प्रतिनिधित्व (दूसरा संशोधन) विधेयक, 1965

(3) स्वर्ण (नियंत्रण) विधेयक, 1965

(4) भाण्डागारण निगम (अनुपूरक) विधेयक, 1965।